हिन्दी भाषा की विश्व भूमिका

– डॉ. अंगदकुमार सिंह

सारांश:

यदि हम हिन्दी को सिरमौर बनाना चाहते हैं तो हिन्दी को अपनाकर जन–जन की भाषा के रूप में विकसित करना होगा और विश्व के सामने अपनी बात हिन्दी में पहुँचानी होगी तब जाकर हिन्दी को जो स्थान मिलना चाहिए वह हासिल हो सकेगा। आज हिन्दी ने भी अपना स्वाभिमान जगा लिया है और इसे अन्तरराष्ट्रीय सम्पर्कभाषा एवं विश्वभाषा के रूप में देखा जा रहा है। हिन्दी की इस विश्वव्याप्ति को देखते हुए अब तक 12 विश्व हिन्दी सम्मेलन आयोजित हो चुके हैं। राष्ट्रीय शिक्षानीति–2020 में सभी भाषाओं के शिक्षण के लिए अनुभावात्मकता पर बल दिया गया है तथा यह आकांक्षा प्रावधानित की गयी है कि शिक्षा के आठवें पड़ाव वर्ष के बाद भी उच्चशिक्षा के संकुल में मातृभाषा तथा राष्ट्रभाषा को प्रवेश दिया जा सकता है, तब यह सन्तोष का विषय है कि मातृभाषा को घर की चहारदीवारी से बाहर निकलकर मुक्त आकाश और वायुमण्डल में घूमने, फूलने और फलने का पर्याप्त अवसर मिलेगा। मॉरीशस में हिन्दी को बढ़ावा देने का कार्य राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा एवं हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ने किया। मॉरीशस में हिन्दी के प्रति लोगों में अधिक रुझान हैं। सोमदत्त बखोरी एवं अनन्त अभिमन्यु वहाँ के प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार रहे हैं। भारत से बाहर इन देशों में जो हिन्दीभाषी हैं उन्हें अपनी मातृभाषा से असीम अनुराग है। विदेशी शासकों की भाषा के प्रति तिरस्कार एवं अपनी मातृभाषा के प्रति सम्मान का भाव देखना हो तो मॉरीशस के प्रसिद्ध साहित्यकार अन्नत अभिमन्यु की काव्य पंक्तियों में देखा जा सकता है– **"मेरे दोस्त/ उस भाषा में मेरे लिए/ शुभ की कामना मत कर/ जिसकी चुभती ध्वनि मुझे/ उस गुलामी के दिनों की याद दिलाती है।"** भारतीय भाषा–संस्कृति का यह बड़ा वैशिष्ट्य है कि कही से भी भाषायी लेन–देन में संकोच नहीं करती। अंग्रेज़ी शब्दकोष की तुलना में हिन्दी शब्दकोष दस गुना बड़े हैं, तथापि आश्चर्य यह कि हिन्दी संयुक्त राष्ट्रसंघ की शोभा नहीं है।

बीजशब्द :

हिन्दीभाषा, मातृभाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा, सम्पर्क भाषा, अन्तरराष्ट्रीय सम्पर्कभाषा, विश्वभाषा, भाषिक अस्मिता, राष्ट्रीय शिक्षानीति–2020।

भूमिका :

अनेक आकर ग्रन्थों के लेखक और सम्पादक, प्रमुख भारतीय भाषा–वैज्ञानिक एवं मास मीडिया संस्थान के यशस्वी संस्थापक निदेशक तथा अतीत अधिष्ठाता, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उत्तरप्रदेश, (भारत) के **प्रोफ़सर रामदरश राय (डी. लिट्.)** से युवा पत्रकार **डॉ. अंगदकुमार सिंह**,

असिस्टेण्ट प्रोफेसर, हिन्दी, जवाहरलाल नेहरू पी. जी. कॉलेज, बाँसगाँव, गोरखपुर, उत्तरप्रदेश की **'हिन्दीभाषा की विश्वभूमिका'** पर एक बेबाक वैचारिक साक्षात्कार।[1]

साहित्य–समीक्षा :

डॉ. अंगदकुमार सिंह : वर्तमान दौर में हिन्दी का लेखन और प्रकाशन–क्षेत्र बढ़ रहा है, हिन्दी अपने अस्तित्त्व से ऊपर उठकर वैश्विक प्रतिमा में सामने आ रही है। इस विषय–प्रसंग पर आप कैसी टिप्पणी करना चाहेंगे?

प्रो. रामदरश राय : यह सच है कि वर्तमान समय में हिन्दी का लेखन और प्रकाशन–क्षेत्र बढ़ रहा है लेकिन लेखन के अनुपात में पाठक–मण्डल में इज़ाफ़ा नहीं हो रहा है। हिन्दी भारत की राजभाषा और राष्ट्रभाषा दोनों है, परन्तु इसके समानान्तर अंग्रेज़ी को खड़ा किया जा रहा है, अंग्रेजी के बोल–बाला और अंग्रेज़ियत की नफ़ासत के कारण हिन्दी को जो स्थान मिलना चाहिए वह नहीं मिल पा रहा है। यदि हम हिन्दी को सिरमौर बनाना चाहते हैं तो हिन्दी को अपनाकर जन–जन की भाषा के रूप में विकसित करना होगा और विश्व के सामने अपनी बात हिन्दी में पहुँचानी होगी तब जाकर हिन्दी को जो स्थान मिलना चाहिए वह हासिल हो सकेगा।

डॉ. अंगदकुमार सिंह : दुनिया के 150 से अधिक देशों और 300 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी अध्ययन और अध्यापन का माध्यम बनी हुई है, किन्तु यह अपने ही देश में अंग्रेज़ी के वर्चस्व के कारण दोयम दर्ज़े का दंश झेल रही है। इस सचाई पर आपका क्या विमर्श है?

प्रो. रामदरश राय : आज हिन्दी पूरी दुनिया में 150 से अधिक देशों और 300 से अधिक विश्वविद्यालयों में अध्यय–अध्यापन का माध्यम बनी हुई है। अन्तरराष्ट्रीय सम्पर्क भाषा (इण्टरनेशनल लिंक लैंग्वेज़) के रूप में विश्व–स्तर पर अंग्रेज़ी की पहचान है, परन्तु आज हिन्दी ने भी अपना स्वाभिमान जगा लिया है और इसे अन्तरराष्ट्रीय सम्पर्कभाषा एवं विश्वभाषा के रूप में देखा जा रहा है। हिन्दी की इस विश्वव्याप्ति को देखते हुए अब तक 12 विश्व हिन्दी सम्मेलन आयोजित हो चुके हैं। वैसे हिन्दी विश्व में अपने अस्तित्त्व–ध्वज को शिखरगामी बना रही है लेकिन आंग्लभाषा के वर्चस्व के चलते यह अपने ही देश में दोयम दर्ज़े का दंश झेल रही है। इसके पीछे कारण कोई दूसरा नहीं बल्कि हम ख़ुद हैं। विश्व के अनेक देशों में हिन्दी को एक वैज्ञानिक एवं सम्मानित भाषा के रूप में विद्वानों द्वारा जाना–पहचाना जा रहा है। राष्ट्रीय परिवेश में देखें तो अहिन्दी भाषी लोगों द्वारा हिन्दी की अधिक सेवा की जा रही है। भारत से लेकर विश्व के धरातल पर हिन्दी की पहचान दिलाने वाले प्रमुख देशों में मॉरीशस, फ़िजी, सूरीनाम, गुयाना, त्रिनिडाड, टोबैगो आदि देशों के अतिरिक्त रूस, फ्रांस, जर्मनी, इटली, पोलैण्ड, चुरु, चेकोस्लावाकिया, इंग्लैण्ड, हालैण्ड, हंगरी एवं युगोस्लावाकिया आदि हैं।

डॉ. अंगदकुमार सिंह : हिन्दीभाषा को भारतीय संविधान द्वारा राजमहिषी बनाया गया था, परन्तु अंग्रेज़ी के प्रभुत्व के कारण यह दासी बनकर हासिये की ओर बढ़ती जा रही है। हिन्दीभाषा की इस दैन्य दशा पर आपका क्या अभिमत है?

प्रो. रामदरश राय : 26 जनवरी, 1950 को भारत का संविधान लागू हुआ और कहा गया कि संविधान की धारा 343 (1) के अनुसार संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अन्तरराष्ट्रीय स्वरूप होगा। संविधान की धारा 343 (2) के अनुसार संविधान लागू होने से 15 वर्ष की अवधि तक संघ के उन सभी राजकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेज़ी का प्रयोग किया जाता रहेगा जिसके लिए अब तक उनका प्रयोग किया जाता रहा है। राष्ट्रपति द्वारा 27 मई, 1952 को एक आदेश जारी किया गया जिसमें राज्यों के राज्यपालों, उच्च एवं उच्चतम न्यायालयों के न्यायाधीशों की नियुक्तियों के आदेश–पत्रों में अंग्रेज़ी के साथ–साथ हिन्दी के प्रयोग को अधिकृत माना गया। इसी तरह 1955 में राष्ट्रपति ने पुन: एक आदेश जारी किया जिसमें जनता के साथ पत्र–व्यवहार, प्रशासनिक रिपोर्ट, सरकारी पत्रिकाएँ और करार, दूसरे देशों के राजदूतों तथा अन्तरराष्ट्रीय संगठनों के साथ पत्र–व्यवहार में अंग्रेज़ी के साथ–साथ हिन्दी के प्रयोग को प्राधिकृत किया गया।

भारत सरकार की राजभाषा हिन्दी विषयक इन सारी जागरूकता और उपलब्धियों के बावज़ूद हिन्दी को शासकीय स्तर पर वास्तविक अस्तित्व नहीं मिल सका। हिन्दी के भाषिक इतिहास का अद्यतन सर्वेक्षण करें तो मिलेगा कि हिन्दी को हाथोंहाथ उठाने वाले संगठन और व्यक्ति असंख्य हैं। परन्तु, उसकी यह उपलब्धि एक लम्बी विकास–यात्रा की कहानी है। इस तरह राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी के लिए बहुत कुछ हो रहा है। किन्तु, भारतीय सन्दर्भ में संविधान–निर्माण के बाद भी 15 वर्षों के लिए राजभाषा हिन्दी के स्वरूप को विकृत बनाये रखना तथा आज तक उसे वैकल्पिक विमर्श का विषय बनाये रखना किसी घातक षडयन्त्र का परिणाम माना जा सकता है। राजभाषा हिन्दी अंग्रेज़ी के इसी वर्चस्व के कारण राजमहिषी न बनकर दासी बनकर हासिए की ओर बढ़ रही है ।

डॉ. अंगदकुमार सिंह : विश्व की छोटी–बड़ी सहस्राधिक भाषाओं में हिन्दी एक समृद्ध भाषा के रूप में आगणित है। हिन्दीभाषा की वैश्विक पहिचान के लिए कौन से सूत्र और प्रयास व्यवहार में लायें जायें ताकि उसे भाषिक अस्मिता का आत्मगौरव हासिल हो सके?

प्रो. रामदरश राय : हाँ, यह सच है कि छोटी–बड़ी हज़ारों भाषाओं में हिन्दी एक समृद्ध भाषा के रूप में आगणित है। आज विश्व–फलक पर हिन्दी का आत्मसम्मान और आत्मविश्वास बढ़ा है। परन्तु, यह विडम्बना पूर्ण बात है कि विश्वभाषा के गौरवमय पद अपने ही देशवासियों की कूटनीतिक तिकड़मों के चलते हिन्दी से खिसक रहा है। स्वतन्त्रता हमें ज़रूर मिल गयी किन्तु भाषा के स्तर पर हम अब भी ग़ुलाम हैं। इस सिलसिले में हिन्दी अकादमी, दिल्ली के पूर्व सचिव डॉ. नारायणदत्त पालीवाल के विचार का एक टुकड़ा

प्रासंगिक तौर पर उल्लेखनीय प्रतीत होता है– "हम 21वीं सदी के द्वार पर खड़े हैं। स्वतन्त्र हैं, पर भाषा के स्तर पर गुलाम मानसिकता के शिकार हैं। स्वराज्य के लिए लड़ते हुए देखे गये स्वभाषा का सपना, सपना ही रह गया। क्या कभी लालकिले की प्राचीर से हिन्दी और भारतीय भाषाओं के सम्बन्ध में उसी प्रकार से नीति के कार्यान्वयन की घोषणा होगी? जिस प्रकार प्रधानमन्त्री राष्ट्र की आर्थिक नीतियों, विकास योजनाओं और रक्षा कार्यक्रमों और विभिन्न नीतिगत निर्णय की घोषणा करते हैं। तभी स्वतन्त्रता दिवस भाषाओं की मुक्ति के दिवस के रूप में नया सवेरा लेकर आयेगा।"

अन्ततः इस बात में तनिक भी सन्देह नहीं कि हिन्दी आज राजभाषा है, राष्ट्रभाषा है, सम्पर्क भाषा है, जन भाषा है और है वह एक विश्वभाषा। उसके विश्वव्यापी सन्दर्भ को विकास और गौरव देने के लिए हम भारतीयों का प्रतिज्ञा–कर्तव्य होना चाहिए कि अपने प्रतिदिन का कार्य मातृभाषा अथवा राष्ट्रभाषा हिन्दी में सम्पन्न करें। न सिर्फ़ देश में, विदेशों में भी हिन्दी को गौरव प्रदान करने के लिए अभी बहुत कार्य करना बाकी है।

डॉ. अंगदकुमार सिंह : भारत सरकार ने नयी शिक्षानीति–20 20 में मातृभाषा के विकास के लिए अध्यादेश निर्गत किया है। यह अधिनियम मातृभाषाओं तथा राष्ट्रभाषा के विकास में कौन–सा योगदान करेगा?

प्रो. रामदरश राय : भारत सरकार ने भाषा की ताक़त को पहचान कर उसे और अधिक मज़बूत तथा सबल बनाने तथा आगे बढ़ाने के उद्देश्य से नयी शिक्षानीति–2020 लागू किया। भारतीय नवजागारण के अग्रदूत, हिन्दी नाटक के शेक्सपियर तथा निबन्धकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने निज भाषा के महत्त्व को बहुत पहले बताते हुए कहा था कि, **"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।"** राष्ट्रीय शिक्षानीति–2020 में सभी भाषाओं के शिक्षण के लिए अनुभावात्मकता पर बल दिया गया है तथा यह आकांक्षा प्रावधानित की गयी है कि शिक्षा के आठवें पड़ाव वर्ष के बाद भी उच्चशिक्षा के संकुल में मातृभाषा तथा राष्ट्रभाषा को प्रवेश दिया जा सकता है, तब यह सन्तोष का विषय है कि मातृभाषा को घर की चहारदीवारी से बाहर निकलकर मुक्त आकाश और वायुमण्डल में घूमने, फूलने और फलने का पर्याप्त अवसर मिलेगा।

डॉ. अंगदकुमार सिंह : विश्व की विलुप्त हो रही बोलियों और भाषाओं के संरक्षण–हेतु भाषाविदों और राष्ट्राध्यक्षों को कौन से क़दम उठाने चाहिए?

प्रो. रामदरश राय : विश्व की विलुप्त हो रही बोलियों और भाषाओं के संरक्षण–हेतु भाषाविदों और राष्ट्राध्यक्षों को इनके प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए तथा भाषा का अध्ययन करने वाले लोगों को छात्रवृत्ति, रोजगार उपलब्ध कराने में भाषाविदों और राष्ट्राध्यक्षों को महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए एवं व्यापक सर्वेक्षण करके मृतप्राय बोलियों और शक्तिहीन भाषाओं को संजीवनी प्रदान करते हुए सबल बनाना चाहिए।

डॉ. अंगदकुमार सिंह : भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को संवैधानिक दर्ज़ा प्राप्त है, परन्तु देश के करोड़ों लोगों की ज़बान 'भोजपुरी' आठवीं अनुसूची में मान्यता प्राप्त सरकारी भाषा

नहीं है। भोजपुरी भाषा और साहित्य को लेकर मॉरीशस समेट अन्य प्रायद्वीप सक्रिय हैं, किन्तु भारत देश मौन और विश्राम की मुद्रा में है। इस पर आपका मत–अभिमत क्या कहता है?

प्रो. रामदरश राय : भारत एक बहुभाषीय राष्ट्र है। अतः स्वाभाविक है कि यहाँ अनेक भाषाओं का सामाजिक स्वरूप मिलेगा। संविधान लागू होने के बाद हर वर्ष 14 सितम्बर को हम **'हिन्दी–दिवस'** मनाते हैं। संविधान की आठवीं अनुसूची में कुल 22 भाषाओं को संवैधानिक दर्ज़ा दिया गया है, यथा– असमिया, उड़िया, उर्दू, कन्नड़, कश्मीरी, गुजराती, तमिल, तेलुगू, पंजाबी, बंगला, मराठी, मलयालम, संस्कृत, सिन्धी, हिन्दी, नेपाली, कोंकड़ी, मणिपुरी, डोंगरी, बोड़ो, सन्थाली, मैथिली। परन्तु, हिन्दुस्तान की सबसे बड़ी भाषा 'भोजपुरी' जिसको बोलने वाले लगभग 30 करोड़ हैं आठवीं अनुसूची में शामिल नहीं है। वहीं विश्व के अन्य देशों (मॉरीशस, ट्रिनीदाद, गुयाना, टोबैगो आदि) में भोजपुरी बोली जाती है लेकिन अपने देश में यह सरकारी मुहर को तरस रही है जिसका कारण राजनैतिक अधिक, सामाजिक कम है। जिस दिन संविधान के नियामको में थोड़ी सी चेतना आयेगी उसी दिन भोजपुरी को उसका प्राप्य प्राप्त हो जायेगा ।

डॉ. अंगदकुमार सिंह : विदित है कि अबतक 12 विश्व हिन्दी सम्मेलन हो चुके हैं। सभी सम्मेलनों ने हिन्दी को संयुक्त राष्ट्रसंघ की भाषा के रूप में देखने का संकल्प लिया है, परन्तु हिन्दी संयुक्त राष्ट्रसंघ की मान्य भाषा नहीं बन सकी है। आपकी दृष्टि में इसके पीछे कौन से प्रच्छन्न कारण हैं।

प्रो. रामदरश राय : संयुक्त राष्ट्रसंघ **के** मंच पर छह भाषाओं (चीनी, अंग्रेज़ी, फ़्रांसिसी, रूसी, अरबी, स्पेनी) के लिए कुर्सी रखी हुई है जिनमें हिन्दी के लिए कोई कुर्सी नहीं है। अबतक के 12 विश्व हिन्दी सम्मेलन बेमानी साबित हो रहे हैं। प्रत्येक सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्रसंघ में हिन्दी को स्थान देने के लिए प्रस्ताव रखा जाता है मगर, सभी प्रस्ताव अबतक शून्य–परिणामी साबित हुए हैं। हिन्दी को संयुक्त राष्ट्रसंघ में सातवीं कुर्सी तब मिल सकती है जब अपने देश में राजभाषा हिन्दी और राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति शत–प्रतिशत अस्मिताबोध जागृति हो।

आजकल देखा जा रहा है कि हिन्दी भाषी क्षेत्रों के लोग हिन्दी की जगह अंग्रेज़ी को करीब लाते जा रहे हैं जिससे निकट भविष्य में हिन्दी बनाम भारतीय भाषा नहीं, हिन्दी बनाम अंग्रेज़ी का एक द्वन्द खड़ा हो सकता है।

डॉ. अंगदकुमार सिंह : भारत का अभिन्न–आत्मीय मित्र देश मॉरीशस हिन्दी और भोजपुरी भाषा–साहित्य को लेकर अधिक जागरूक और चैतन्य है। मॉरीशस की इस भाषानिष्ठा की पृष्ठभूमि पर आप किस तरह की रोशनी डालना चाहेंगे?

प्रो. रामदरश राय : भारत का अभिन्न–आत्मीय मित्र देश मॉरीशस हिन्दी और भोजपुरी भाषा–साहित्य को लेकर अधिक जागरूक और चैतन्य है। बिहार और उत्तरप्रदेश से परिस्थितिवश गिरमिटिया श्रमिक के रूप में गये हुए मॉरीशस के तमाम पुरुखे मॉरीशस के ही होकर रह गये। भारत से गये हमारे ये पुरुखे भारतीय संस्कृति, तुलसी का श्रीरामचरितमानस, हनुमान चालीसा और लोकसंवेदना की थाती विरहा,

फगुआ, कजरी और ऋतुगीत, श्रमगीत भी ले गये। अत: स्वाभविक था मॉरीशस में आबाद होने के बाद भारतीय संवेदना और साहित्य की थाती को सहेजते और सुरक्षित रखते। आज हिन्दी माध्यम से अध्ययन–अध्यापन हेतु वहाँ अनेक विद्यालय खुले हैं तथा हिन्दी में अनेक पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं। मॉरीशस में हिन्दी को बढ़ावा देने का कार्य राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा एवं हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ने किया। मॉरीशस में हिन्दी के प्रति लोगों में अधिक रुझान हैं। सोमदत्त बखोरी एवं अनन्त अभिमन्यु वहाँ के प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार रहे हैं। भारत से बाहर इन देशों में जो हिन्दीभाषी हैं उन्हें अपनी मातृभाषा से असीम अनुराग है। विदेशी शासकों की भाषा के प्रति तिरस्कार एवं अपनी मातृभाषा के प्रति सम्मान का भाव देखना हो तो मॉरीशस के प्रसिद्ध साहित्यकार अन्नत अभिमन्यु की काव्य पंक्तियों में देखा जा सकता है– **"मेरे दोस्त/ उस भाषा में मेरे लिए/ शुभ की कामना मत कर/ जिसकी चुभती ध्वनि मुझे/ उस गुलामी के दिनों की याद दिलाती है।"**

डॉ. अंगदकुमार सिंह : हिन्दीभाषा–साहित्य का शब्दकोष विदेशी भाषाओं की आवाजाही के कारण भी समृद्धतर हुआ है। इस तथ्य पर आपकी प्रतिक्रिया कैसी है?

प्रो. रामदरश राय : हिन्दीभाषा–साहित्य का शब्दकोश विदेशी भाषाओं की आवाजाही के कारण समृद्ध हो रहा है यह बात सोलह आने सच है। विदेशियों से सम्बम्ध बढ़ने के कारण बहुत से विदेशी शब्द हिन्दी में अन्तर्भुक्त हो गये। यथा–मोजा, आदमी, हवा, ज़मीन, बच्चा, बहादुर, मसालची, समस्या, ख़ुराक, ख़ामोशी, देहात, चौकीदार, मुर्गा, शादी, शोर, पैजामा,गली, दारोगा, कुली, खजांची, उर्दू, बुलबुल, बीवी, बावर्ची, पठान, रोहिल्ला, डॉक्टर, टिकट, मोटर, ग्लास, गेट, कोट, कम्पनी, कालेज, ट्रेन, फैक्ट्री, डिस्पेंसरी, चाभी, तम्बाकू, अलमारी, स्त्री, गोभी, चीनी, चाय, चुंगी आदि शब्द विदेशी हैं जो अब हिन्दी के हो चुके हैं। इतना ही नहीं भारत की विदेश नीति, आयात–निर्यात नीति और शैक्षिक, व्यावसायिक तथा सांस्कृतिक विनिमय के कारण भी भारतीय साहित्य के शब्दकोष बृहत्तर बन रहे हैं। भारतीय भाषा–संस्कृति का यह बड़ा वैशिष्ट्य है कि कही से भी भाषायी लेन–देन में संकोच नहीं करती। अंग्रेज़ी शब्दकोष की तुलना में हिन्दी शब्दकोष दस गुना बड़े हैं, तथापि आश्चर्य यह कि हिन्दी संयुक्त राष्ट्रसंघ की शोभा नहीं है।

निष्कर्ष:

समग्रत: इस बात में तनिक भी सन्देह नहीं कि हिन्दी आज राजभाषा है, राष्ट्रभाषा है, सम्पर्क भाषा है, जनभाषा है, और है वह एक विश्वभाषा। उसके विश्वव्यापी सन्दर्भ को विकास और गौरव देने के लिए हम भारतवासियों का प्रतिज्ञा–कर्त्तव्य होना चाहिए कि अपने प्रतिदिन का कार्य मातृभाषा अथवा राष्ट्रभाषा हिन्दी में सम्पन्न करें। न सिर्फ़ देश में, विदेश में भी हिन्दी को गौरव प्रदान करने के लिए अभी बहुत कार्य करना बाकी है।

सन्दर्भ :

1. साक्षात्कार : प्रो. रामदरश राय से डॉ. अंगदकुमार सिंह का 'हिन्दीभाषा की विश्वभूमिका' पर, दिनांकः 01 मार्च, 2023

असिस्टेण्ट प्रोफ़सर: हिन्दी, जवाहरलाल नेहरू पी.जी. कॉलेज, बाँसगाँव, गोरखपुर (उ.प्र.)–273403

मो.नं.: 7460856206, ई–मेल: **anagadkumarsingh01@gmail.com**